# बी0ए0-III समाजशास्त्र
# सामाजिक अनुसन्धान की पद्धतियाँ
# (द्वितीय प्रश्नपत्र)
# (Social Research Methods)

**डॉ0 अभिषेक गोपाल**
प्रवक्ता, समाजशास्त्र, श्री हरिश्चन्द्र पी0जी0 कॉलेज, वाराणसी
मो0 8765857996

## Unit-I
## अध्याय–2
## उपकल्पना का अवधारणाकरण एवं रचना
## (Conceptualization and Formulation of Hypothesis)

किसी भी अनुसंधान और सर्वेक्षण की समस्या के चुनाव के बाद अनुसन्धानकर्ता समस्या के बारे में 'कार्य–कारण सम्बन्धों' (Cause and Effect Relationship) का पूर्वानुमान लगा लेता है या पूर्व चिन्तन कर लेता है। यह पूर्व चिन्तन या पूर्वानुमान ही प्राक्कल्पना, परिकल्पना या उपकल्पना कहलाती है। उदाहरण के लिये, हम 'भारत में बढ़ती हुई अपराध–प्रवृत्ति' नामक समस्या का अध्ययन करना चाहते हैं। इस समस्या के कार्य–कारण सम्बन्धों के बारे में हम सामान्य ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर हम यह अनुमान लगाते हैं कि ''निर्धनता ही बढ़ती हुई अपराध–प्रवृत्ति के लिए प्रमुख कारण है।'' हमारा यह कथन ही हमारे अध्ययन विषय की प्राक्कल्पना कहलायेगी। हम अपने अध्ययन में यह

देखने का प्रयास करेंगे कि निर्धनता तथा अपराध के बीच क्या सम्बन्ध है? क्या हमारा पूर्वानुमान सही है अथवा नहीं? यह कामचलाउ अनुमान या पूर्व चिन्तन हमारे अध्ययन कार्य को आधार प्रदान करेगा और उसे आगे बढ़ायेगा। हमारे वास्तविक अध्ययन के बाद हमारी यह उपकल्पना या प्राक्कल्पना सही भी सिद्ध हो सकती है और गलत भी। हमारा उद्देश्य प्राक्कल्पना को सही साबित करना नहीं होता है, वरन् वास्तविक तथ्यों के आधार पर वैज्ञानिक सत्य को ढूँढना होता है। प्राक्कल्पना निर्माण का उद्देश्य तो विषय से सम्बन्धित तथ्यों को संकलित करना और शोधकर्ता का मार्गदर्शन करना तथा उसे अनिश्चय के अंधकार में भटकने से रोकना है। इसी आधार पर कोहेन (Gohen) ने उपकल्पना को अनुसंधान का एक मध्य बिन्दु कहा है।

गुडे एवं हाट (Goode & Hatt) ने लिखा है, ''प्राक्कल्पना अनुसंधान और सिद्धान्त के बीच एक आवश्यक कड़ी है जो ज्ञान वृद्धि की खोज में सहायक होती है।''

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि उपकल्पना का निर्माण करना किसी भी सामाजिक अनुसंधान का अन्तिम लक्ष्य नहीं होता। उपकल्पना केवल एक साधन है जबकि शोधकर्ता का लक्ष्य उपकल्पना की सहायता से अध्ययन से सम्बन्धित यथार्थ तथ्यों की खोज करना है। उपकल्पना के द्वारा ही विभिन्न तथ्यों के बीच कार्य–कारण के सम्बन्धों को स्थापित करना सम्भव हो पाता है। यही कारण है कि सभी शोधकर्ता उपकल्पना के

निर्माण को वैज्ञानिक अनुसंधान के सबसे पहले चरण के रूप में स्पष्ट करते हैं। उपकल्पना के इसी अर्थ और प्रकृति को हम उपकल्पना का अवधारणाकरण (Conceptualization of Hypothesis) कहते हैं।

लुण्डबर्ग (G.A. Lundberg) के शब्दों में, ''उपकल्पना एक कामयचलाउ सामान्यीकरण है जिसकी सत्यता की परीक्षा अभी बाकी है। अपने बिल्कुल प्रारम्भिक स्तरों पर उपकल्पना एक अनुमान, कल्पनात्मक विचार अथवा पूर्वानुमान आदि कुछ भी हो सकती है जो बाद में किसी भी क्रिया अथवा अनुसंधान का आधार बन जाती है।''

इसी आधार पर उपकल्पना को अक्सर 'कार्यकारी उपकल्पना' (Working Hypothesis) भी कहा जाता है।

**उपयोगी उपकल्पना की विशेषताएं (Charactersistics of Useful Hypothesis)–**

किसी भी उपयोगी उपकल्पना में निम्नांकित विशेषताओं का होना आवश्यक है–

**1. स्पष्टता–**

एक अध्ययनकर्ता अपने अध्ययन के लिये जिस उपकल्पना का निर्माण करता है, उसकी भाषा और अर्थ स्पष्ट तथा निश्चित होनी चाहिए जिससे उसकी मनमाने ढंग से विवेचना न की जा सके।

**2. अनुभवसिद्धता–**

उपकल्पना का निर्माण करते समय अनुसन्धानकर्ता को यह ध्यान रखना चाहिए कि उपकल्पना किसी आदर्श को प्रस्तुत करने वाली न हो बल्कि उसके द्वारा किसी विचार अथवा अवधारणा की सत्यता की परीक्षा की जा सके।

**3. विशिष्टता–**

उपकल्पना सामान्य न होकर विशिष्ट होनी चाहिए। यदि अध्ययन विषय के सभी पक्षों को लेकर एक सामान्य उपकल्पना का निर्माण कर लिया जाता है तो अनुसन्धानकर्ता एक समय में ही विषय के सभी पक्षों का यथार्थ अध्ययन नहीं कर सकता। इस दृष्टिकोण से यह ध्यान रखना आवश्यक है कि उपकल्पना अध्ययन–विषय के किसी विशेष पक्ष से ही सम्बन्धित हो।

**4. उपलब्ध प्रविधियों से सम्बद्ध–**

उपकल्पना का निर्माण करते समय यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि उपकल्पना ऐसी होनी चाहिए जिसका उपलब्ध प्रविधियों द्वारा परीक्षण किया जा सके।

**5. सिद्धान्तों से सम्बन्धित–**

उपकल्पना का निर्माण करते वक्त यह ध्यान रखना आवश्यक है कि वह पहले प्रस्तुत किये गये किसी सिद्धान्त अथवा सिद्धान्तों से सम्बन्धित हो।

**उपकल्पना की रचना (Formulation of Hypothesis)–**

उपकल्पना की अवधारणा को समझने के साथ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि उपकल्पना की रचना अथवा इसका निर्माण वह सबसे महत्वपूर्ण आधार है जिस पर किसी सामाजिक अनुसंधान की सफलता निर्भर होती है। इसी कारण आर0 एल0 एकॉफ (R.L. Ackoff) ने विस्तार के साथ इस तथ्य की विवेचना की है अनुसन्धान कार्य के लिए किसी उपकल्पना का निर्माण किस प्रकार किया जाये जिससे अनुसन्धानकर्ता को अपने कार्य के लिए एक सही दिशा मिल सके। एकॉफ का यह मानना है कि कोई अनुसंधानकर्ता जब एक विषय का अध्ययन आरम्भ करता है तो आरम्भ में ही उसके सामने ऐसे अनेक वैकल्पिक अनुमान आने लगते हैं जिनके सत्यापन के द्वारा ही वह किसी व्यावहारिक निष्कर्ष एक पहुँच सकता है। अध्ययनकर्ता के लिये यह जरूरी होता है कि ऐसे सभी वैकल्पिक अनुमानों की व्यावहारिकता को कुछ कसौटियों के आधार पर परखने का प्रयत्न करे तथा इसके बाद जो अनुमान कुछ विशेष सिद्धान्तों या अध्ययनों के आधार पर अधिक प्रामाणिक प्रतीत होता हो, उसी की सहायता से अनुसन्धान कार्य के लिए एक या कुछ उपकल्पनाओं की रचना करे। उदाहरण के लिये, यदि हमारे अनुसंधान का विषय अपराध के कारणों को जानने से सम्बन्धित है तो विभिन्न सिद्धान्तों के द्वारा हमारे सामने अपराध के एक–दूसरे से भिन्न कारण स्पष्ट होते हैं। इस दशा में यदि हमें ऐसा लगता है कि आर्थिक अथवा भौगोलिक कारणों की तुलना

में सामाजिक दशाओं के आधार पर अपराध की विवेचना करने वाला सिद्धान्त अधिक व्यावहारिक है तो हम यह उपकल्पना विकसित कर सकते हैं कि 'अपराध कुछ विशेष तरह के समूहों की संगति के प्रभाव का परिणाम होता है।'

वास्तव में उपकल्पना की रचना का सम्बन्ध अनेक प्रश्नों से है। पहला प्रश्न यह है कि उपकल्पना की रचना के विभिन्न आधार क्या है? उपकल्पना की रचना के लिए उन स्रोतों को समझना भी आवश्यक है जिनके द्वारा अनुसंधानकर्ता को एक विशेष प्रकार की उपकल्पना की रचना करने की प्रेरणा मिलती है। दूसरा प्रश्न इस बात से सम्बन्धित है कि किस तरह एक ऐसी उपकल्पना की रचना की जा सकती है जो अधिक उपयोगी और व्यावहारिक हो। इसके साथ ही अनुसन्धानकर्ता को उन कठिनाइयों को ध्यान में रखना भी आवश्यक है जिनसे एक सही उपकल्पना की रचना में बाधाएँ पैदा होती है। इस प्रकार उपकल्पना की रचना एक बड़ी सीमा तक अनुसन्धानकर्ता के सैद्धान्तिक ज्ञान, व्यवहारिक दृष्टिकोण तथा तटस्थ निर्णय पर निर्भर होती है।

**उपकल्पना की रचना के आधार (Basis of Formulation of Hypothesis)–**

ऐसे आधार जिनकी सहायता से अध्ययन के लिए एक या कुछ उपकल्पनाओं की रचना की जा सकती है वे निम्नलिखित हैं–

**1. अनुभवसिद्ध समानतायें–**

उपकल्पना की रचना का यह वह आधार है जो सामान्य लोगों के अनुभवों या कुछ विशेष तरह की मान्यताओं पर आधारित होता है। उदाहरण के लिये, जब हम यह कहते हैं कि काना व्यक्ति धूर्त होता है, गाँव की तुलना में नगर में अपराधों की दर अधिक होती है अथवा यह कि निरक्षर लोगों की तुलना में शिक्षित व्यक्ति स्थान परिवर्तन अधिक करते हैं तो यह साामन्य अनुभव पर आधारित ऐसे निष्कर्ष है जिनकी सहायता से कुछ विशेष उपकल्पनाओं की रचना की जा सकती है।

**2. आदर्श प्रारूप–**

किसी उपकल्पना की रचना का दूसरा महत्वपूर्ण आधार कुछ ऐसे आदर्श प्रारूप है जो कुछ विशेष दशाओं के सह–सम्बन्ध को स्पष्ट करते हैं। उदाहरण के लिये, विभिन्न अल्पसंख्यक समूहों के अध्ययन ये यह स्पष्ट हुआ कि इन समूहों के लोग अपनी किसी भी कठिनाई के कारण बहुसंख्यक लोगों के दबाव व शोषण को मानते हैं। यह एक ऐसी दशा है जो पूरी तरह काल्पनिक भी हो सकती है और प्रामाणिक भी लेकिन इसे केवल अनुसन्धान कार्य के द्वारा ही जाना जा सकता है।

**3. विश्लेषण के चारों के सह–सम्बन्ध–**

अनेक उपकल्पनाओं की रचना का आधार अध्ययन विषय से सम्बन्धित विभिन्न पदों अथवा इकाइयों के बीच पाया जाने वाला सह–सम्बन्ध होता है। साधारणतया यदि अनुसंधान कार्य प्रयोगात्मक

पद्धति के आधार पर किया जाता है तो एक विशेष दशा को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों में से किसी एक को नियन्त्रित करके उस पर दूसरे कारकों के प्रभाव का एक–एक करके अध्ययन किया जाता है।

उपकल्पना की रचना के इस विभिन्न आधारों में से किसी को भी दूसरे की तुलना में अच्छा या बुरा नहीं कहा जा सकता। यह सभी आधार सामान रूप से महत्वपूर्ण है। अनुसंधान कार्य की प्रकृति के अनुसार इनमें से किसी भी एक आधार पर उपकल्पना की रचना की जा सकती है।

**उपकल्पना की रचना के स्रोत (Sources of Formulation of Hypothesis)–**

गुडे तथा हाट ने उपकल्पना की रचना के लिये प्रमुख स्रोतों को स्पष्ट किया है उन्हें संक्षेप में निम्नांकित रूप से समझा जा सकता है–

**1. सामान्य संस्कृति–**

प्रत्येक समाज की अपनी कुछ पृथक् सांस्कृतिक विशेषताएं होती है। इसी के अनुसार एक समाज अथवा समुदाय की सामाजिक संस्थाओं, व्यवहार के तरीकों, विश्वासों और विभिन्न समूहों के पारस्परिक सम्बन्धों का निर्धारण होता है। एक अनुसन्धानकर्ता के अध्ययन की समस्या जिस संस्कृति से सम्बन्धित होती है, उसी के अनुसार किसी विशेष उपकल्पना का निर्माण होता है।

**2. वैज्ञानिक सिद्धान्त–**

समय–समय पर विभिन्न सिद्धान्तकारों द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले सिद्धान्त भी उपकल्पना की रचना का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। एक

अनुसंधानकर्ता का उद्देश्य अपने अध्ययन के आधार पर किसी नये सिद्धान्त का निर्माण करना ही नहीं होता है बल्कि वह बदलती हुयी दशाओं में अपने से पहले दिये गये सिद्धान्तों की सत्यता की जाँच भी करता है। उदाहरण के लिये, मर्टन ने अपने प्रकार्यवादी सिद्धान्त में यह निष्कर्ष दिया कि सामाजिक संरचना की कोई इकाई सदैव उपयोगी ही नहीं होती बल्कि इसके कुछ अप्रकार्य भी हो सकते हैं। इस सिद्धान्त के आधार पर ऐसी उपकल्पना बनने लगती है जो परम्परागत सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तन के कारणों को स्पष्ट कर सके।

**3. समरूपतायें–**

जब कभी भी दो दशाओं के बीच कुछ समानतायें दिखाई देती है तो उनके आधार पर कुछ नयी उपकल्पनाओं की रचना करना संभव हो जाता है। उदाहरण के लिये, पेड़–पौधों पर उनके चारों ओर की जलवायु के प्रभाव को देखकर यह उपकल्पना बनायी गयी कि मनुष्य के व्यवहारों, विचारों तथा व्यक्तित्व पर उसकी समााजिक परिस्थिति का एक स्पष्ट प्रभाव होता है। इसी से सामाजिक पारिस्थितिकी (Social Ecology) की अवधारणा विकसित हुयी।

**4. व्यक्तिगत अनुभव–**

अनुसंधानकर्ता के व्यक्तिगत अनुभव भी उपकल्पनाओं की रचना का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। उदाहरण के लिये, लम्ब्रोसो ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर इस उपकल्पना की रचना की कि अपराधी

जन्मजात होते हैं। डार्विन की अस्तित्व के लिये संघर्ष की उपकल्पना तथा माल्थस की जनसंख्या वृद्धि की प्राक्कल्पना भी उनके व्यक्तिगत अनुभव का ही परिणाम थी।

**5. विभिन्न अध्ययनों के निष्कर्ष–**

वैयक्तिक स्तर पर किये जाने वाले प्रत्येक अनुसंधान कार्य के निष्कर्ष से किसी दूसरी उपकल्पना की रचना करना संभव हो सकता है। उदाहरण के लिए, जब अनेक अनुसंधानकर्ता गाँव के निर्धन किसानों, अनुसूचित जनजातियों, दलित जातियों तथा अकुशल श्रमिकों के अध्ययन से यह निष्कर्ष देते हैं कि विभिन्न विकास योजनाओं और कानूनों के बाद भी इन वर्गों की दशा में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं है तो इससे अपने आप यह उपकल्पना बनने लगती है कि विकास कार्यक्रमों का दोषपूर्ण क्रियान्वयन तथा भ्रष्टाचार पिछड़े वर्गों के सामाजिक तथा आर्थिक शोषण का मुख्य कारण है।

**6. वैयक्तिक अन्तर्दृष्टि–**

कुछ व्यक्ति इतने चिन्तनशील, विवेकपूर्ण और पैनी दृष्टि वाले होते हैं कि अपने निजी अनुभव के आधार पर वे एक विशेष समस्या के मूल कारण को समझकर उससे सम्बन्धित एक विशेष उपकल्पना प्रस्तुत कर देते है। राजनीतिक समाजशास्त्र से सम्बन्धित विभिन्न विषयों के अध्ययन में इस तरह की उपकल्पनाओं का विशेष महज है।

**उपकल्पना का महत्व (Importance of Hypothesis)–**

गुडे और हाट का कथन है कि ''अच्छे अनुसंधान में उपकल्ना का निर्माण करना सर्वप्रमुख चरण हैं।''

कोई भी सामाजिक अनुसंधान उपकल्पना के अभाव में व्यवस्थित नहीं किया जा सकता। उपकल्पना एक प्रकार का प्रकाश–स्तम्भ है जो अध्ययनकर्ता को दिशा–निर्देश देता हैं और उसे व्यर्थ की सूचनाओं के संग्रह से रोकता है।

विभिन्न क्षेत्रों में उपकल्पना के महत्व अथवा कार्यों को निम्नांकित रूप से समझा जा सकता है–

**1. अध्ययन की दिशा का निर्धारण–**

उपकल्पना की उपयोगिता को स्पष्ट करते हुए पी0 वी0 यंग का कथन है कि ''उपकल्ना से अनुसन्धानकर्ता ऐसे तथ्यों को एकत्रित करने से बच जाता है जो बाद में अध्ययन विषय के लिए व्यर्थ सिद्ध होते हैं।''

उपकल्पना की सहायता से जब अध्ययन को एक उचित दिशा मिल जाती है तो अध्ययनकर्ता भी व्यर्थ के परिश्रम, समय और व्यय से बच जाता है।

**2. अध्ययन–क्षेत्र को सीमित करने में सहायक–**

प्रत्येक अध्ययन विषय के बहुत से पहलू हो सकते हैं। यदि अध्ययनकर्ता सभी पहलुओं को एक साथ लेकर अध्ययन करना आरम्भ कर

दे तो किसी भी पहलू की गहराई में जाकर तथ्यों को एकत्रित नहीं किया जा सकता। अध्ययन की वैज्ञानिकता के लिये अध्ययन क्षेत्र का सीमित होना आवश्यक है जो उपकल्पना की सहायता से ही संभव हो सकता है।

**3. उपयोगी तथ्यों के संकलन में सहायक–**

किसी भी सामाजिक घटना अथवा समस्या का अध्ययन करते समय अध्ययनकर्ता के सामने अनेक प्रकार के तथ्य आते हैं। कभी–कभी उन तथ्यों की उपयोगिता अथवा अनुपयोगिता को न समझ पाने के कारण अध्ययनकर्ता तथ्यों को छोड़कर व्यर्थ के संकलन में लग जाता है। इसके फलस्वरूप, सम्पूर्ण अध्ययन अव्यवस्थित और अवैज्ञानिक बन सकता है। इस स्थिति में उपकल्पना की सहातया से यह निश्चित करना आसान हो जाता है कि किन तथ्यों को एकत्रित किया जाये और किन्हें सरलता से छोड़ा जा सकता है।

**4. तर्कसंगत निष्कर्षों में सहायक–**

उपकल्पना वह मान्यता है जिसके द्वारा अनुसंधान कार्य आरम्भ करने से पहले ही एक कामचलाउ निष्कर्ष प्रस्तुत कर दिया जाता है। यह निष्कर्ष सत्य है अथवा असत्य, इसका परीक्षण बाद में एकत्रित तथ्यों के आधार पर किया जाता है। तथ्यों के आधार पर यदि उपकल्पना से सम्बन्धित निष्कर्ष सही प्रमाणित होता है तो उसे एक सामान्य नियम के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है।

**5. सिद्धान्तों के निर्माण में योगदान–**

सामाजिक अनुसंधान का अन्तिम उद्देश्य सिद्धान्तों का निर्माण करना होता है। उपकल्पना की सहायता से जो सामान्य निष्कर्ष दिये जाते हैं, वे नये सिद्धान्तों का निर्माण करने में भी अत्यधिक सहायक होते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि किसी भी अनुसंधान में उपकल्पना का महत्व केन्द्रीय है।

**उपकल्पना की सीमाएँ (Limitations of Hypothesis)–**

सामाजिक अनुसंधान में उपकल्पना के महत्व को देखते हुए यह नहीं समझ लेना चाहिए कि यह एक दोषरहित विधि है तथा कोई भी उपकल्ना वैज्ञानिक अध्ययन का आधार बन सकती है। उपकल्पना–निर्माण की भी अपनी कुछ सीमायें हैं जिनको ध्यान में रखकर ही इसके दोषों से बचा जा सकता है।

उपकल्पना निर्माण की सीमाएं निम्नलिखित हैं–

1. उपकल्पना की सबसे बड़ी सीमा अथवा दोष स्वयं अनुसन्धानकर्ता की असावधानी है। एक ओर अनुसन्धानकर्ता अक्सर अपनी भावनाओं अथवा पूर्वाग्रहों के आधार पर उपकल्पना का निर्माण कर लेता है, वही दूसरी ओर अपनी उपकल्पना में उसका विश्वास इतना अटूट होता है कि वह उससे हटकर तथ्यों को देखना और समझना नहीं चाहता। अनेक अनुसन्धानकर्ता अपनी उपकल्पना को प्रमाणित करना अपनी प्रतिष्ठा का विषय मान लेते हैं जो अत्यधिक दोषपूर्ण मनोवृत्ति

है। इसके फलस्वरूप एक विशेष उपकल्पना पर आधारित सम्पूर्ण अध्ययन अवैज्ञानिक हो जाता है।

2. उपकल्पना की दूसरी सीमा स्वयं सामाजिक अध्ययनों से सम्बन्धित है। सामाजिक घटनायें अत्यधिक जटिल अथवा परिवर्तनशील होती है। इस स्थिति में विषय से सम्बन्धित विस्तृत सूचनायें एकत्रित करने से पहले ही अपने मन में कोई सामान्य अनुमान लगा लेना बहुत कठिन होता है। आरम्भिक अनुमान अक्सर गलत उपकल्पनाओं के लिए उत्तरदायी होते हें।

3. उपकल्पना के निर्माण में सांस्कृतिक विशेषताओं का भी बहुत महत्व होता है। वर्तमान स्थिति यह है कि आज विभिन्न संस्कृतियों के बीच इतना अधिक आदान–प्रदान हो रहा है कि किसी भी समाज की संस्कृति का रूप विशुद्ध नहीं है। इसके फलस्वरूप, यदि किसी सांस्कृतिक विशेषता को ही उपकल्पना का स्रोत मान लिया जाता है तो अक्सर इसके दोषपूर्ण होने की संभावना हो जाती है।

4. उपकल्पना के निर्माण का एक दूसरा प्रमुख स्रोत प्रचलित सिद्धान्त होते हैं। साधारणतया किसी सिद्धान्त के आधार पर एक उपकल्पना का निर्माण तो कर लिया जाता है लेकिन अक्सर यह नहीं देखा जाता कि सम्बन्धित अध्ययन के लिये वह सिद्धान्त कितना अधिक व्यावहारिक अथवा उपयोगी है। इसके फलस्वरूप उपकल्पना

अध्ययनकर्ता को दिशा–निर्देश देने के स्थान पर उसे अनेक भ्रमपूर्ण परिस्थितियों में डाल देती है।

5. उपकल्पना की एक महत्वपूर्ण सीमा पूर्वगामी सर्वेक्षण की प्रकृति से सम्बन्धित है। साधारणतया उपकल्पना का निर्माण किसी पूर्वगामी सर्वेक्षण अथवा सामान्य अवलोकन की सहायता से किया जाता है। कठिनाई यह है कि शीघ्रता में किये गये पूर्वगामी सर्वेक्षण के द्वारा अनुसन्धानकर्ता को उत्तरदाताओं से अक्सर सही सूचनायें प्राप्त नहीं हो पाती। इस स्तर पर सूचनाओं की सत्यता को देख सकना भी बहुत कठिन होता है। इसके फलस्वरूप, उन सूचनाओं के आधार पर बनायी गयी उपकल्पना भी दोषपूर्ण हो जाती है।

कार्यकारी उपकल्पना के उपर्युक्त सम्पूर्ण विवेचन से स्पष्ट होता है कि सामाजिक अनुसंधान में उपकल्पना के महत्व को अस्वीकार नहीं किया ज सकता। उपकल्पना की सीमाएँ केवल इस तथ्य को स्पष्ट करती है कि उपकल्पना का निर्माण अत्यधिक सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। वास्तविकता यह है कि सामाजिक अनुसंधान में उपकल्पना वह महत्वपूर्ण आधार है जो अध्ययनकर्ता पर नियन्त्रण रखकर उसे अध्ययन की सही दिशा दे सकता है।

●